ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 90-91

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

शिवमूर्ति की कहानियों में नारी के प्रति यथार्थ की अभिव्यक्ति

1. सुमन यादव
2. डॉ0 सपना चौहान

1. शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशक (उ0प्र0), भारत

Received- 25 .10. 2021, Revised- 30.10. 2021, Accepted - 04.11.2021 E-mail: sumanjaysingh90@gmail.com

सारांशः ***शिवमूर्ति अपने समय के महत्वपूर्ण कथाकार हैं, ये नगरीय जीवन के ही नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन के भी कथाकार हैं। इनकी कहानियों में ग्राम्य परिवेश से जुड़ी नारी–जीवन की समस्याएँ चित्रित हैं। शिवमूर्ति की कहानियों में ग्राम्य जीवन की विशेषताएँ और अंतर्विरोध अपने नग्न यथार्थ के रूप में अभिव्यक्त हुआ हैं। जहाँ जाति व्यवस्था की अतल गहरी जड़े मानवीय संबंधों को छिन्न–भिन्न करती दिखाई देती हैं, जहाँ स्त्री और दलित स्त्री को गहन यातनाओं और विवशताओं में लगातार जीना पड़ता है। 'कसाईबाड़ा', 'अकालदण्ड', तिरिया चरित्तर', सिरी उपमा जोग' तथा 'कुच्ची का कानून' इत्यादि कहानियों में इस यथार्थ को स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है। इन कहानियों की स्त्रियाँ विमली, शनिचरी, कुच्ची तथा सुरजी के साथ समाज, परिवार, कानून, सरकारी तंत्र का व्यवहार और हथकड़े ग्रामीण जीवन का कड़वा सच सामने ला कर रख देते हैं। 'कसाईबाड़ा' कहानी शनिचरी के धरने पर बैठने से शुरू होती है। 'गाँव में बिजली की तरह खबर फैलती है कि शनिचरी धरने पर बैठे गई हैं, परधान जी के दुआरे। लीडरजी कहते है, जब तक परधान जी उसकी बेटी वापस नही करते, शनिचरी अनशन करेगी आमरण अनशन।***

कुंजीभूत शब्द–अंतर्विरोध, नग्न यथार्थ, अभिव्यक्त, जाति व्यवस्था, कसाईबाड़ा, अकालदण्ड, तिरिया चरित्तर, लीडरजी।

1. इस कहानी में सनिचरी की मदद कोई नहीं करता है। एक परधान जी है जो उसकी बेटी को आदर्श विवाह के नाम पर बेच देता है और दूसरा लीडर जो उसकी जमीन पर आँख गडाए हुए है सनिचरी को उकसाकर आने वाले प्रधानी के चुनाव में अपनी जीत पक्की करना चाहता है। शासन तंत्र भी यहा इन लोगों के हाथों बिका हुआ है। इस कहानी में एक विधवा स्त्री शनिचरी की स्थिति तथा जो उच्चवर्ग की स्त्रियाँ है उनकी भी कोई इज्जत नहीं पुरूष उन्हें गवार जाहिल समझते हैं। जब लीडर की पत्नी को पता चलता है कि उसका पति सनिचरी से धोखे से उसकी जमीन पर कब्जा किया, तक वह कहती है। "तुम लोग कसाई हो। सारा गाँव कसाई बाड़ा है। मैं नहीं रहूंगी इस गाँव में"।

इस कहानी में शनिचरी की हत्याकर ग्राम प्रधान उसकी ही बेटी को वेश्या बनने पर विवश कर देता है। यही यथार्थ है इस कहानी का। 'अकालदण्ड' कहानी का आरम्भ 'सुरजी के साथ सिक्रेटरी बाबू ने गजब कर दिया, लेकिन उसने इस हादसे के बारे में किसी से मुँह नहीं खोला क्या फायदा।

2. सिकरेटरी के खिलाफ इस गाँव में बोलने वाला कौन है? उलटे अपने 'पट–पानी' से हाथ धोना पड़ेगा।

3. शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री प्रमुख पात्र होती है कहानी इन्हीं स्त्रियों के जीवन यथार्थ के आस–पास चलती है। 'अकाल–दण्ड' कहानी की नायिका सुरजी है जो सिक्रेटरी की हरकतो से परेशान गांव में भीषण अकाल पड़ा हुआ है। वह अपनी वृद्धा सास के चलते यहां रूकी हुई है। नहीं तो वह अपने मायके चली गयी होती। इस अकाल में वह अपनी इज्जत को कैसे बचाये 'काहे आपकी मती भ्रष्ट हो गई है सिक्रेटरी बाबू। आवाज दूसरे कोने से आती है। "हम गरीबन का भी दुनिया मा इज्जत आबरू के साथ परा रहे देव। हाथ जोड़ित हैं चले जाव।

4. सुरजी सिक्रेटरी से परेशान वह उसे गाहे–बगाहे परेशान करता रहता है अन्त में सुरजी सिक्रेटरी के लिंग का नाजुक हिस्सा काट लेती है और अंधेरे में गुम हो जाती है। "तब तक कैम्प की और से चीत्कार की आवाज आती है फिर क्रमशः बढ़ता कोलाहल! वे कांछ बाँधते हुए लपकते है। सिक्रेटरी के तम्बू के अन्दर भीड़ जमा हो गई हैं अन्दर का दृश्य इतना भयानक है। सिक्रेटरी बाबू पलंग पर नंग–धडंग पडे छटपटा रहे है। सुरजी ने हाँसिए से उनकी देह का नाजुक हिस्सा अलग कर दिया है और पिछवाड़े के रास्ते भागकर अँधेरे में गुम हो गई है। 'सिरी उपमा जोग' ऐसी कहानी है जिसमें महत्वाकांक्षा के चलते हृदयहीनता संवेदनशून्यता दिखाई गई है। इस कहानी के केंन्द्र में दो स्त्री पात्र दिखाई गई है। लालू की माई जो इस कहानी के केन्द्रीय स्त्री पात्र हैं, वह अपने पति को पढ़ा लिखाकर अफसर बनाती है और वह अंत में वही पति पत्नी को और दो बच्चों को गांव में उनके हालात पर छोड़ देता है और शहर में न्यायाधीश की बेटी से शादी कर लेता है। वह लालू की माई को भूल जाता है, क्योंकि वह गवार है उसकी सोसायटी में वह अब नहीं खपती है यह कहानी इस ओर इशारा करती है कि हमारा समाज स्त्री के प्रति आज उदासीन है।

शिवमूर्ति गांव की स्त्रीयों की जीवनतता के बारे में, उनके परिश्रम के और जीवन के प्रति उनके सकारात्मक लगाव को उद्धत करते हैं, 'सिरी उपमा जोग' में यह भी दिखलाते है कि लालू की माँ कितनी मेहनती है जिंदगी के प्रति आस्था और

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

आत्मविश्वास से भरी है। नायक याद करता है" बहुत गरीबी के दिन जब उनका गौना हुआ था इंटर पास किया उस साल लालू की माई बल के कद काठी की हिम्मत और जीवट वाली महिला थी आशा और आत्मविश्वास की प्रति मूर्ति। उसको देखकर उसके मन में श्रद्धा होती थी। उसके प्रति इतनी आस्था हो जिंदगी और परिश्रम में तो संसार के कोई भी वस्तु अलभ्य नहीं रह सकती।

यह कहानी बहुत प्रमाणिक तरीकें से पितृसत्तात्मक समाज के व्यवहार पर रोशनी डालती है। इस कहानी में पंचायत के बीभत्स स्वरूप को दिखाया है। यह वही पंचायत है जिस के बारे प्रेमचन्द्र ने आदर्श रूप प्रस्तुत करते हुए 'पंच परमेश्वर' जैसी कहानी लिखी थी। कहानी के पात्र जुम्मन के माध्यम से कहलवाते "आज मुझे ज्ञात हुआ की पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है न दुश्मन न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की जुबान से खुदा बोलता है" लेकिन आज यह पंचायत का रूप बदल गया पंच अब खुदा की जुबान नहीं बोलते,

ससुर द्वारा बहू का बलात्कार होता है उस पर भी ससुर के पक्ष में पंचायत का फैसला किसी खाप पंचायत के फैसले से कम मालूम नहीं होता हैं। यह फैसला इस बात का प्रतीक है कि हमारा समाज आज भी स्त्री के प्रति कितनी नीची सोच रखता हैं 'तिरिया चरित्तर' के संदर्भ में स्त्रियों को लेकर जो लोगों के मन में अवधारणाएं बनी हुई है, शिवमूर्ति इस कहानी के माध्यम से पूरी तरह तोड़ते दिखाई पड़ते है। इस कहानी के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश करते है कि सिर्फ स्त्री का चरित्र ही निकृष्ट एवं दोयम दरजे का नहीं हो सकता है, बल्कि पुरूष का चरित्र ही स्त्री के बरक्स लम्पट या दुसचरित्र हो सकता है शिवमूर्ति पुरूष को तिरिया चरित्तर दिखाकर भारतीय पंरम्परा के उस वर्चस्व को खारिज करते है जो सदियों से स्त्रीयों के प्रति बना हुआ हैं। स्त्रियां ही तिरिया चरित्तर नहीं करती पुरूष भी करते हैं और जब पुरूष करता है तो वह कितना नीचे गिर जाता है। इसे दिखलाने की कोशिश विश्राम के रूप में शिवमूर्ति करते है। "छन्न! कलछुल खाल से छूते ही पतोहू का चीत्कार कलेजा फाड़ देता है कूदती लोथ मांस जलने की चिरायंध! चीत्कार सुनकर एकाध कुत्ते भौंकते है एकाध रोने लगते है चीखते–चीखते बेहोश हो गई पतोहू। लोग पीछे हटते है"।

यह दृश्य दिल दहलाने वाला है और हमारे पुरूष समाज की अमानवीयता का यथार्थ वर्णन है। 'केशर कस्तूरी कहानी शिवमूर्ति की शेष कहानियों से अलग मिजाज की है। पिता की अकर्मण्यता और बेटी की उदात्ता के बीच पसरी कहानी है, यह कहानी अत्यंत कारूणिक है। अपने सामान्यपन में यह बेधती है। पूरी कहानी अभिधात्मक है, अपने कहने के ढंग से लेकर संप्रेषण के स्तर तक। केशर ने नियति को स्वीकार प्रारब्ध से लड़ने का जो जज्बा है वह अत्यन्त मार्मिक है। "यह केशर नहीं केशर के रूप में मूर्त हिन्दूस्तानी नारी का हजारों हजार पीढ़ीयों से विरासत में मिला अनुभव और यथार्थ को उसके ठोस व्यवहारिक रूप में पकड़ लेंने की उसकी अन्तश्चेतना बोल रही थी। इस हकीकी दर्शन को सहसा किसी किताबी तर्क से काटने का दुष्साहस संभव नहीं था। झूठी मरजाद में लिपटी पिता की अकर्मण्यता लापरवाही को अपने प्रयत्नों से इंच दर इंच ढ़कने की कोशिश करती केशर आस–पड़ोस की बहन बेटी सी लगती है। केशर जीवन से हार नहीं मानती है वह अपने जीवन में यथार्थ को स्वीकार करती है उससे संघर्ष करती है, केशर किसी से मदद नहीं मांगती है वह परिस्थितियों को स्वीकार करती है। अपने संघर्ष से उसने सामन्जस्य स्थापित करती है अपनी बूढ़ी सास की सेवा घर का काम और घर पर सिलाई भी करती है। इसी से अपना जीवन यापन करती है कहानी की केशर के मौसा अधिकारी होकर भी उसकी कोई मदद नहीं कर पाते है। कहानी के अंत में उससे मिलने उसके घर जाते है उन्हें लगता हैं कि जैसे केशर उनसे कह रही हो मौसा आप भी तो कुछ नहीं किये, अंत में शिवमूर्ति की कहानी गांव की स्त्रियों की कहानी है गांव की स्त्री कमजोर नहीं है बल्कि अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाती हैं।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिवमूर्ति केशर कस्तूरी पृष्ठ सं – 7.
2. वही पृष्ठ सं. – 23.
3. वही पृष्ठ सं. – 24.
4. वही पृष्ठ सं. – 33.
5. वही पृष्ठ सं. – 51.
6. वही पृष्ठ सं. – 55.
7. संपादक – किशनकालजयी, संवेद, फरवरी–अप्रैल 2014 पृष्ठ 119.
8. उदृत पृष्ठ सं. 108.
9. शिवमूर्ति केशन कस्तूरी पृष्ठ सं. 123.
10. वही पृष्ठ सं. 139.

*****